पुस्तक मेले की तलाश में अमेरिकी लेखक

रूमा दासगुप्ता

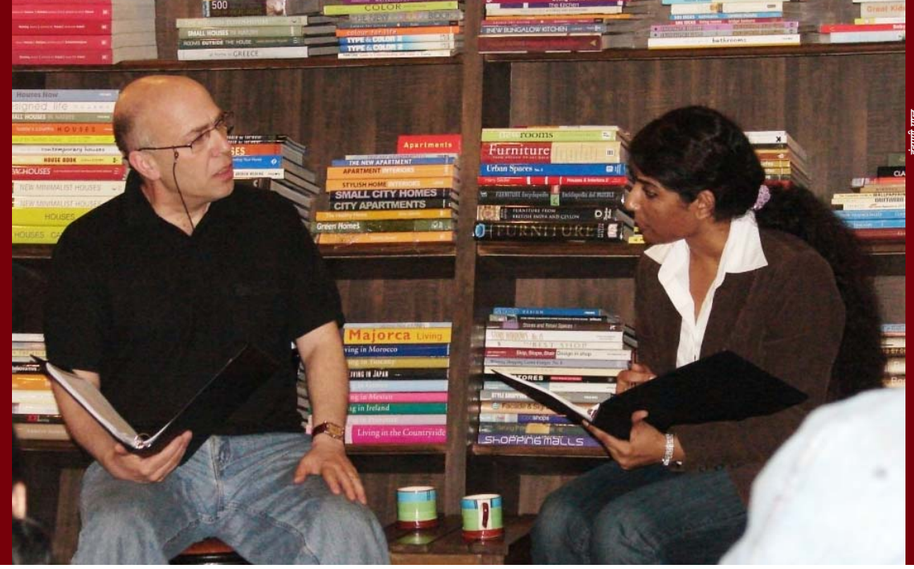

इंद्रमणि पटनायक

अमेरिकी नाट्य लेखक ब्रायन रूसो और बांग्ला नाटककार मालविका भट्टाचार्य कोलकाता के स्टारमार्क बुकस्टोर में एन नेल्सन के एक नाटक, द गाइज, को पढ़ते हुए।

इस बार जाड़े ने हम पुस्तक प्रेमियों की आशाओं पर पानी फेर दिया। हमें 33वें कोलकाता पुस्तक मेले में अतिथि देश के रूप में अमेरिका की भागीदारी का इंतज़ार था। लेकिन कलकत्ता उच्च न्यायालय ने निर्णय दिया कि इस साल मेले के लिए चुने गए स्थल पार्क सर्कस का मैदान कई शैक्षणिक संस्थानों और उनसे भी बढ़कर, एक अस्पताल के समीप है। इसलिए उद्घाटन से पहले पुस्तक मेला रद्द हो गया। मामले को अदालत में ले जाने वाले नागरिक अधिकार कार्यकर्ताओं द्वारा ऐसा करने के सारे कारण थे। – संसार का तीसरा सबसे बड़ा पुस्तक मेला मौजूदा ध्वनि प्रदूषण और यातायात अव्यवस्था को काफी बढ़ा देता। पार्क सर्कस की हरी घास को वहां लगे स्टालों से पहले ही क्षति पहुंची थी और साल भर सुबह-शाम वहां खेलने वाले बच्चों का पार्क में खेलना बंद हो जाता। पुस्तक प्रेमियों के मन पर छाई निराशा आकाश में छाए काले बादलों से ज़्यादा थी। बंगाल की खाड़ी पर अचानक बना कम दाब क्षेत्र वैसा ही अनपेक्षित था जैसा देश के इस भाग में परम्परागत पुस्तक मेले के बिना जाड़े मौसम का आना था। कोलकाता पुस्तक मेला बंगाल की साहित्यिक विरासत का समकालीन मुहावरा है।

कोलकाता स्थित अमेरिकन सेंटर ने पुस्तक प्रेमियों को अमेरिकी लेखक पॉल थेरॉ के शब्दों में ''छापामार पुस्तक मेले'' के जरिये सांत्वना प्रदान करने का फैसला किया। हालांकि यह भूमिगत नहीं था। यह लोगों के लिए पूरी तरह खुला था और इसमें पुस्तक वाचन, व्याख्यान, गोष्ठियां, स्पेलिंग प्रतियोगिता और ''क्या अमेरिकी संस्कृति का भारतीय युवाओं पर सकारात्मक असर पड़ता है?'' विषय पर अंतर-महाविद्यालीय वाद-विवाद प्रतियोगिता भी थी। एक तरह से किताबों की बिक्री भी हुई। अमेरिकन लाइब्रेरी ने अपनी सदस्यता में 50 फ़ीसदी की छूट दी।

पश्चिम बंगाल सरकार और प्रकाशन कंपनियों ने 1 से 10 मार्च के बीच नए तरह से मेला लगाया। अमेरिकन पॅविलियन में सीमा मुरुगन का एलिस वाकर पर कथा साहित्य, वीज़ा जानकारी और फ़ुलब्राइट के बारे में परामर्श, पुस्तक एवं नाटक वाचन, कोलकाता स्कूल ऑफ़ म्यूज़िक क्वार्ट्रेट द्वारा अमेरिकी संगीत की प्रस्तुति, पुलक दास द्वारा अमेरिकी लोकगीत और अमेरिकन सेंटर द्वारा अमेरिकी राष्ट्रपति चुनावों के बारे में प्रस्तुति शामिल थी।

1816 में मार्क ट्वेन से कोलकाता में पूछा गया कि क्या किसी बंगाली से मिले हैं? उनका जवाब था, ''अभी साक्षात भेंट तो नहीं हुई है लेकिन क्या साहित्य में उसे भुलाया जा सकता है?'' किताबों से बंगाल का सम्बन्ध बहुत पुराना है। यह भावनापूर्ण जुड़ाव 30 जनवरी से 7 फ़रवरी तक अमेरिकी संस्कृति से परिचित कराते थेरो के शब्दों में 'गुरिल्ला बुक फ़ेयर' में देखने को मिला जिसमें प्रसिद्ध अमेरिकी लेखक पॉल थेरा, कवि जॉय हार्जो, क्रिस्टॉफर मेरिल और अन्य ने शिरकत की। आधिकारिक पुस्तक मेले की जगह साहित्यिक मेले के माध्यम से अमेरिका से आए लेखकों और पाठकों ने अंतरंग वातावरण में आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों में समकालीन अमेरिकी लेखन के मर्म पर चर्चा की।

पुस्तक मेले का रद्द होना प्रकाशकों और पुस्तक विक्रेताओं के लिए हताशाजनक था। संसारभर से हज़ारों पुस्तकें कोलकाता के लिए रवाना की जा चुकी थीं, अमेरिका और बंगाल के कवियों की कविताओं की पुस्तक 'द मिंगलिंग ऑफ़ वाटर्स' की 10,000 प्रतियां पाठकों की प्रतीक्षा कर रही थीं ...। लेकिन अमेरिकन सेंटर में लिंकन रूम, बांग्ला अकादमी, यापन चित्र गैलरी, प्रेसिडेंसी कॉलेज, टाउन हॉल या ऑक्सफोर्ड बुकस्टोर पहुंचने वाले पुस्तक प्रेमियों के लिए अनुभव काफी उत्साहवर्धक रहा।

स्थानापन्न मेले के पहले दिन अमेरिकी साहित्य में सांस्कृतिक आख्यानों की तलाश के बारे में बात करते हुए थेरॉ, हार्जो और मेरिल ने श्रोताओं को अभिभूत कर दिया। हार्जो और मेरिल यू.एस.कोलकाता लिटररी एक्सचेंज के सौजन्य से आए प्रतिनिधिमंडल के सदस्य थे जबकि थेरॉ कोलकाता स्थित अमेरिकन सेंटर के अतिथि थे।

अमेरिकन सेंटर के निदेशक डगलस केली थेरॉ के लेखन के ज़बर्दस्त प्रशंसक हैं और उन्हीं के प्रयासों से यह नामी लेखक दोबारा कोलकाता आए। 1970 के दशक में कोलकाता की अपनी पहली यात्रा का वर्णन उन्होंने अपनी ख्याति स्थापित करने वाली पुस्तक 'द ग्रेट रेलवे बाज़ार' में दिया है। थेरॉ मानते हैं कि किसी भी जगह की दूसरी यात्रा जहां तक सम्भव हो, पहली यात्रा को स्थल मार्ग से दोहराते हुए, पहले देखी जगहों को इस बीच अर्जित अनुभव के प्रकाश में दोबारा देखते हुए, की जानी चाहिए। ऐसा न हो तो यात्रा विवरण किसी विशिष्ट समयबिन्दु पर किसी जगह का व्यक्ति चित्र भर बन कर रह जाता है।

थेरॉ ने अपनी बात स्पष्ट की, ''जैसे कि कल, और फिर आज मैं यहां कालीघाट स्थित काली मंदिर गया। जो आज दिखा, वह कल देखे से अलग था- लोग अलग थे, प्रकाश अलग था, यहां तक कि खुद मेरी ही मन:स्थिति अलग थी।'' यह स्पष्टीकरण कुछ हद तक 'द ग्रेट रेलवे बाज़ार' में व्यक्त कोलकाता के बारे में उनके विचारों के बारे में पत्रकारों की ओर से उठी चुनौती का उत्तर भी था।

दुनियाभर में उनकी यात्राओं की कहानियां सुनकर मन में कहीं आश्वस्ति जागी कि पैकेज टूरों और आभासी विश्वभ्रमण के उत्तर-आधुनिक दौर में संसार सिकुड़कर पूरी तरह वैश्विक गांव नहीं बना है।

भारत में ब्रिटिश साम्राज्य की राजधानी रहे कोलकाता में मदिरा को ठंडा और हवा को शीतल करने के लिए कनाडा की एक झील से लाई गई बर्फ को रखने वाले ब्रिटिश गोदामों की याद दिलाते हुए थेरॉ ने पूछा, ''आपने वे बर्फखाने देखे हैं? ... वाल्डेन (झील) का शुद्ध पानी गंगा के पवित्र जल से मिलता था ....।''

थेरॉ के यात्रा विवरण किसी जगह के पर्यटन आकर्षणों की सूची पर नहीं, वहां के लोगों से उनके वैचारिक आदान-प्रदान पर आधारित हैं। उन्हें मंदिरों, किलों या संग्रहालयों का नहीं, किसी जगह का मानवीय वास्तुशिल्प अभिभूत करता है। अपनी संस्कृति और अपने पर्यावरण, अपने अतीत और वर्तमान के संदर्भ में मनुष्य, उनकी देह भाषा और उनकी विशिष्टताएं ही शायद भक्तों-फेरीवालों-खरीददारों से भरे, शहर के एक रूप मंडी से घिरे, श्मशान के पड़ोस में बसे कालीघाट क्षेत्र में ले गई जहां दलाल, पुरोहित और गृहस्थ मां काली के पड़ोसी हैं।

दशकों तक नोबेल पुरस्कार विजेता साहित्यकार वी.एस.नायपॉल के अभिन्न मित्र रहे थेरॉ ने उनहीं की प्रेरणा से हमारे युग के सांस्कृतिक परिवर्तनों का विवरण देते 50 से भी अधिक यात्रा विवरण, कई निबन्ध, कहानियां और उपन्यास लिखे हैं।

वह कहते हैं, ''मैं ग्रेट अमेरिकन उपन्यास कभी नहीं लिखूंगा। मैं जो लिखूंगा वह यह दिखलाएगा कि मैं कहां गया, क्या देखा और इस अनुभव से मैंने क्या जाना।''

थेरॉ जहां अपनी खास निगाह से देखी दुनिया के बारे में लिखते हैं, वहीं हार्जो अपने लोगों की साझी जनजातीय स्मृति की संपदा से आख्यान लिखती हैं। समय के आरपार होने वाली उनकी यात्राओं में अतीत और वर्तमान एक-दूसरे के हाथ थामे चलते हैं। चमकीले काले केशों से घिरे हार्जो के चेहरे की रेखाएं, उनकी कविता की ही तरह अनेक कहानियां कहती हैं। मस्कॉकी जनजाति के स्मृति कोष और पहचान को बचाने के संघर्ष में सक्रिय कवियित्री कहती हैं, ''मैं अमेरिका की उन 500 जनजातियों और संस्कृतियों में से एक की सदस्य हूं जो आधिकारिक नक्शे में शामिल नहीं हैं।'' पलभर को उनकी आंखें जलती सी लगती हैं।

मई 1951 में तल्सा, ऑक्लाहॉमा में चित्रकारों के परिवार में जन्मी हार्जो यूनिवर्सिटी ऑफ़ न्यू मेक्सिको में कला का अध्ययन करते-करते कविता का अध्ययन करने लगीं और शायद इसलिए उनकी कविता में कला और संगीत का दुर्लभ संयोग दिखता है। उन्होंने अपने गीत भी सैक्सोफोन की धुन पर सुनाए।

अमेरिकी लेखक (दाएं से) पॉल थेरॉ, जॉय हार्जो और क्रिस्टोफर मेरिल अमेरिकन सेंटर के निदेशक डगलस केली (बिल्कुल बाएं) की मेजबानी में हुए पुस्तक वाचन के बाद लोगों से विचार-विमर्श करते हुए।

पंकज दत्ता

अपने संग्रहों *इन मैड लव एंड वार* और *द वुमन हू फेल फ्रॉम द स्काई* से कविताओं का पाठ करने से पहले श्रोताओं को सम्बोधित करते हुए हार्जो ने कहा, ''मेरे कबीले में कविता दास्तानगोई, संगीत और नाच से जुड़ी है। हमारे यहां ज़्यादातर कविता किताबों की कैद से आज़ाद है। हमारे परिवारों में कहानियां और गीत याद रखना किसी एक व्यक्ति की ज़िम्मेदारी होती है। गर्भावस्था में हम गाथाएं सुनती हैं- इस तरह कहानियां हमारे बच्चों में पहुंचकर स्मृति के रूप में दर्ज़ होती हैं। आपको कहानियों को स्वीकार करना चाहिए।''

लंबी हवाई यात्रा की थकान और अव्यवस्था से चकराई हार्जो को कोलकाता की रफ़्तार से तालमेल बैठाने में जरा समय लगा लेकिन प्रकृतिस्थ होने के बाद उन्होंने भारतीय समाज की खास पहचान और उसके अंतरस्थ विश्वासों को जानने की इच्छा से किसी ज्योतिषी और हस्तरेखा विशेषज्ञ से मिलने की इच्छा जताई। उनके शांति निकेतन के लिए रवाना होने से पहले हम लोग जान गए थे कि वह हम से अलग नहीं हैं।

कोलकाता ने पाया कि मेरिल खामोश खज़ाने की तरह थे। *द ग्रास ऑफ़ एनादर कंट्री : ए जर्नी थ्रू द वर्ल्ड ऑफ़ सॉकर, द ओल्ड ब्रिज : द थर्ड बाल्कन वार और द एज ऑफ़ द रेफ्यूजी* के लेखक मेरिल ने सत्ता पर काबिज़ होकर प्रकृति की व्यवस्था को नष्ट कर रहे और युद्ध और शांति की शतरंज खेल रहे सत्तावानों की बुद्धि की पड़ताल का आह्वान किया।

संवाददाता, साहित्य समीक्षक और अध्यापक रह चुके मेरिल ने विशेष रूप से यूगोस्लाविया के युद्ध क्षेत्रों के अपने अनुभव दर्ज़ किए हैं। उन्होंने किसी का भी पक्ष लिए बिना असली कहानी दर्ज़ करने के अपने सरोकार की बात कही। उनकी हाल की गैर कथा कृति थिंग्स ऑफ़ द हिडन गॉड में यूनान में 20 सन्यासी गृहों और 2000 सन्यासियों के ठिकाने माउंट एथॉस के यात्रा विवरण हैं जहां वह विभिन्न प्रकार के प्रेम, आध्यात्मिक से व्यावसायिक तक, की स्वीकृति रचते मिलते हैं। उनके चार कविता संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं और वह यूनिवर्सिटी ऑफ़ आयॅवा में इंटरनेशनल राइटिंग प्रोग्राम के निदेशक भी हैं।

वह कहते हैं, ''कविता पढ़ना और लिखना प्रार्थना के अनुभव से अलग नहीं है।'' उनकी कई कविताएं दिव्यता की तलाश हैं।

मध्ययुगीन गाथाओं और लोकसंगीत के रसिक मेरिल माउंट एथॉस के चर्चों के देवचित्रों के अज्ञात चित्रकारों से लेकर वासिली कांदिंस्की और मार्क शागाल जैसे चित्रकारों की कृतियों तक को पसन्द करते हैं। उन्होंने गर्मी के अंतिम दिन खाली मैदान में गेंद नचाते एक सॉकर खिलाड़ी के बारे में जो कविता सुनाई, वह काफी हद तक रैप संगीत की याद दिला रही थी और कोलकाता वासियों के प्रिय खेल की लय को पकड़ने में सफल रही थी।

रूमा दासगुप्ता स्वतंत्र लेखक और हारमनी पत्रिका की संवाददाता हैं। वह कोलकाता में रहती हैं।

कृपया इस लेख के बारे में अपने विचार editorspan@state.gov पर भेजिए।

नई दिल्ली पुस्तक मेला

रमा भट्टाचार्य

नई दिल्ली में 2 से 10 फ़रवरी तक आयोजित विश्व पुस्तक मेले में अमेरिकन सेंटर के बूथ पर आए 30,000 से अधिक दर्शकों ने अमेरिकन लाइब्रेरी की प्रदर्शित सामग्री और स्पैन पत्रिका के माध्यम से अमेरिका की झलक देखी। उन्हें इंडो-अमेरिकन कोऑपरेटिव पब्लिशिंग प्रोग्राम के रिप्रिंट टाइटल के बारे में जानकारी देने के साथ ''ग्लिम्पसेज़ ऑफ़ द युनाइटेड स्टेट्स'' नाम की पावर पॉइंट प्रस्तुति के माध्यम से अमेरिकी जीवन-संस्कृति और अमेरिका में चुनावों के बारे में भी बताया गया। दर्शकों ने प्रतिदिन आयोजित होने वाली क्विज़ में भी भारी संख्या में भाग लिया और पुरस्कार के रूप में अमेरिकन लाइब्रेरी और स्पैन पत्रिका की सदस्यता प्राप्त की।